ॐ

व्यवहारवाक्यानि

प्रकाशिका

लोकभाषा-प्रचार-समितिः

बड़ा-ओडिया-मठः, पुरी

व्यवहारवाक्यानि

शिष्टाचारः

नमस्ते/नमस्कार	....	नमस्ते/नमस्कारः/नमः
सुबह का नमस्कार	....	सुप्रभातम्
रात में	....	शुभरात्रिः
जी	....	श्रीमन्
जी, हाँ	....	आम्
कृपया	....	कृपया
धन्यवाद	....	धन्यवादः
क्षमा कीजिये	....	क्षन्तव्यम्
बाए बाए (टा टा)	....	शुभमस्तु
चिन्ता मत करो	....	चिन्ता मास्तु
स्वागतम्	....	स्वागतम्
कोई बात नहीं	....	कीर्त्तनं मास्तु

व्यवहारवाक्यानि

शुभेच्छा ...... शुभेच्छा

जा रहा हूँ ...... गच्छामि

फिर मिलेंगे ...... पुनर्दर्शनाय

आ रहा हूँ ...... आगच्छामि

हे ! / अरे ! / ए ! ...... हे ! / आहे / अयि !

दुर्भाग्य ...... दौर्भाग्यम्

गृहे परस्परमेलनम्

नमस्कार ...... नमस्कार/नमस्ते/नमोनमः

आइये ...... आगच्छतु

बैठिये ...... उपविशतु

सब अच्छा है / कुशल है ? ...... अपि सर्वं कुशलम् ?

और क्या समाचार ...... कः समाचारः

सब ठीक है ? ...... किं सर्वे स्वस्थाः ?

हाँ ...... आम्

आपका क्या हाल चाल है ? .... भवतः कः समाचारः ?

यों ही चल रहा है ...... जीवनं प्रचलति

व्यवहारवाक्यानि

कहिये/बोलिए	....	कथयतु
बहुत दिन से दर्शन नहीं हो रहे हैं....		बहु-दिनात् दर्शनं नास्ति
अब (आप) कहां है ?	....	अधुना कुत्र ?
कट्नी में, कटक में।	... .	कटन्याम्/दिल्याम्
इधर कैसे ?	.... ..	अत्र कथम् ?
कुछ काम था	....	किंचित् कर्म आसीत्
क्या चाय या काफि ?	....	किम् चायं, काफि वा ?
नहीं, रहने दीजिए	....	मास्तु
सुयोग देखकर फिर आइये........		अवसरे पुनः आगच्छतु
अच्छा, आउँगा	... .	भवतु, आगमिष्यामि
फिर मिलेंगे	... .	पुनर्दर्शनाय

मार्गे वार्तालापः

ए / हे	....	आहे / हे
कहां से आये	... .	कुतः आगमनम्
स्कूलसे/घरसे/खेलके मैदानसे.... ...		विद्यालयात्/गृहात्/ क्रीडाङ्गणात्

व्यवहारवाक्यानि

दूकानसे/बाजार से	....	आपणात्/विपणीतः/
मन्दिरसे आ रहा हूं	......	मन्दिरात् आगच्छामि
कहां जा रहे हो	....	कुत्र गच्छति ?
घर / खेलमैदान	....	गृहं/क्रीडाङ्गणम्
स्कूल/आफिस	....	विद्यालयं/कार्यालयम्
दूकान/मन्दिर	....	आपणं/मन्दिरम्
जा रहा हूं	... ...	गच्छामि
पढ़ाई कैसे चल रही है ?	......	अध्ययनं कथं प्रचलति ?
ठीक है	....	उत्तमम्
तबीयत कैसी है ?	....	स्वास्थ्यं कथमस्ति ?
पेट में दर्द है	....	उदरे पीडा भवति
कल का पेपर देखा	......	ह्यस्तनं वृत्तपत्रं दृष्टम् ?
क्या हुआ	....	किं जातम् ?
पाठ्यपुस्तक खरीद लिया ?	....	पाठ्यपुस्तकानि क्रीतानि किम् ?
नहीं, मिलता नहीं	....	नहि, न मिलति

आओ खेलेंगे	......	आगच्छ भो ! खेलामः
अच्छा चलो	......	भवतु, चल,

नित्यकर्मसमये वार्त्तालापः

मुँह धोलिया	......	मुखं क्षालितं किम् ?
मुँह धो लिया, दूध दो	......	मुखं क्षालितं, क्षीरं ददातु
दूध पीकर पढ़ूँगा	......	क्षीरं पीत्वा पठिष्यामि
अच्छा, लो	......	भवतु, गृह्णातु
नास्ता करके पढ़ो	......	उपाहारं कृत्वा पठतु
दतिवन नहीं किया ?	......	दन्तधावनं न कृतम् ?
दन्तमञ्जन	......	दन्तफेनः/दन्तचूर्णः
ब्रस/दतुन कहां हैं ?	......	दन्तधावनी/दन्तशलाका कुत्र ?
मैं पहले नहाऊँगा	......	अहं प्रथमतः स्नानं करिष्यामि
अंगोछा कौन लिया	......	प्रोञ्छवस्त्रं केन नीतम्
स्नानघरमें पानी नहीं है	......	स्नानगृहे जलं नास्ति
साबुन चाहिए ?	......	फेनकम् आवश्यकम्

व्यवहारवाक्यानि

मैया भूख लग रहा है .... मातः बुभुक्षा भवति
नहाकर जल्दी आओ .... स्नात्वा शीघ्रमागच्छ
भोजन सिद्ध हो गया ? .... भोजनं सिद्धं वा ?
स्कूल जाने का समय हो गया........ विद्यालयसमयः संजातः
रसोई बन गई ... . पाचनं सिद्धमेव
मेरा प्यैन्ट ! सार्ट मम ऊरुकं।युतकम्
गंजी/किताब .... .. अन्युतकं पुस्तकम्।
पेनसिल/चाक ... अङ्कनी, सुधाखण्डः
चप्पल । कलम .... पादत्राणं । लेखनी
यूनिफार्म ड्रेस् कहां है ? .... गणवेशः कुत्रः ?
देखा, वहां होगा .... पश्य तत्रैव स्यात्
मैया स्कूल जा रहा हूं .... मातः ! विद्यालयं गच्छामि
परीक्षा निकट आ गयी .... परीक्षा समीपे आगता
ठीक से पढ़ो ...... सम्यक् पठतु
थोड़ा खेलने के लिए जाऊंगा .. .... किंचित् खेलितुं गमिष्यामि
घर का पाठ लिख रहा हूं .... गृहपाठं लिखामि

नींद आ गई	निद्रा आगता
कल लिखुँगा	श्वः लेखिष्यामि
भोजन करके सो जाओ........	भोजनं कृत्वा शयनं कुरु
जल्दी दो	शीघ्रं ददातु
सब लोगों को खाने के लिए बुलाओ........	भोजनार्थं सर्वान् आह्वयतु
सब आ गये	सर्वे आगताः
चावल, शाग, भाजा, सब्जी	अन्नं व्यञ्जनं, भर्जं शाकम्
दाल, खट्टा, दही	द्विदलं अम्लं दधि
अचार दो	अचारं देहि
अच्छा, परोस रहा हूं	अस्तु, परिवेषणं करोमि
क्या सब्जी में नमक ज्यादा है........	किं व्यञ्जनं लवणाक्तम् ?
मै नही खाऊँगा	नाहं खादिष्यामि ।
खाओ	खादतु, खादतु
बस, नहीं चाहिए	अलम् अनावश्यकम्
क्या अच्छा नहीं लगता ?........	किं न रोचते वा ?

कुछ लो .... किंचित् नयतु
बस् ज्यादा हो गया .... मास्तु अधिकं जातम्
हाथ धोकर सो जाओ .. .... हस्तं प्रक्षाल्य निद्रां करोतु

विद्यालये—वार्त्तालापः

आज साइकल नहींलाये हो क्या ? .. अद्य द्विचक्रिका नानीता ?
लाया हूं .... आनीता
तुम कैसे आते हो ? .... भवान् कथम् आगच्छति ?
मै चलकर आता हूं .... अहं पदव्रजेन आगच्छामि
क्या तुम्हारे पास साईकल नहीं है ?........ तव पार्श्वे द्विचक्रिका नास्ति किम् ?
हाँ, है .... आम् अस्ति
साईकल चलाना नहीं जानता हूं........ द्विचक्रचालनं न जानामि
घरका पाठ लिखे हो ?........ गृहपाठः लिखितः वा ?
हां लिखा हूं ... .. आम् लिखितम्

व्यवहारवाक्यानि

विज्ञान पुस्तक खरीदे हो ? .... विज्ञानपुस्तकं क्रीतम् ?

न .... नहि

दूकानमें नहीं मिलती .... आपणे न मिलति

घण्टी बज गयी .... घण्टा ताडिता

जल्दी आओ .... शीघ्रमागच्छतु

रुको, मैं आ रहा हूं .... तिष्ठतु भो, अहम् आगच्छामि

गुरूजी आ गये .... शिक्षकाः आगताः

हल्ला मत करो .... कोलाहलः मास्तु

शिक्षक—छात्रयोः सम्भाषणम्

पाठ पढ़े हो ? .... पाठः पठितो वा ?

इस प्रश्नका उत्तर क्या है ? .... किम् अस्य प्रश्नस्य उत्तरम् ?

खड़े हो जाओ .... उत्तिष्ठतु

सर् मैं कहूंगा .... श्रीमन् ! अहं कथयामि

सब शोर बन्द करो .... सर्वेः सम्भाषणं मास्तु

व्यवहारवाक्यानि

शान्त रहो	तूष्णीं तिष्ठतु
मै जिसको कहूं I,	अहं यां / याम् आदिशामि,
वही कहे ...	स /सा कथयतु
तुम कहो	त्वं कथय
कल नहीं आया था।आयी थी,	ह्यः नागत /नागता
इसलिए नहीं जानता हूं	अतः न जानामि
अच्छा, बैठो	अस्तु उपविश
क्या अन्दर आ सकता हूं	किमहं अन्तःआगच्छानि
आओ ...	मित्र/बन्धु आगच्छ
क्या बाहर जा सकता हूं	किमहं बहिर्गच्छानि
जाओ	
पुस्तक खोलो	.... पुस्तकम् उन्मोचय
खड़ा रहो	तिष्ठ
याद रखो	स्मर
भूलो मत	.... मा विस्मर
बार-बार चेष्टा करो.....	बारं बारं चेष्टां कुरु
बैठो	उपविश
पेन रखो	लेखनीं स्थापय ....

परीक्षा–समये

प्रश्न कैसे हैं ?	....	प्रश्नाः कथं सन्ति ?
बहुत कठिन । सरल	....	बहुकष्टं/बहुसहजम्
परीक्षा फल कब निकलेगा	....	:परीक्षाफलं कदा प्रकाशितं भविष्यति
कल हो सकता है	....	श्वः भवेत्
मै प्रथम श्रेणीमें	....	अहं प्रथमश्रेण्याम्
पास किया हूं	....	उत्तीर्णा/उत्तीर्णः

२

सामान्यक्रिया-पदानि व्यवहारप्रयोगाश्च

धीरे चलो	....	शनैः चल	....	चलन्तु
घर जाओ	....	गृहं गच्छ	....	गच्छन्तु
जल्दी आओ	....	शीघ्रमागच्छ	....	आगच्छन्तु
मन लगाके पढो	....	एकाग्र-मनसा पठ	....	पठन्तु
पत्र लिखो	....	पत्रं लिख	....	लिखन्तु
फुट्बल खेलो	....	कन्दुकं खेल	....	खेलन्तु

पाठ कहो	....	पाठं कथय	....कथयन्तु
मन लगाके सुनो	....	मनोयोगपूर्वकं शृणु	...शृण्वन्तु
दूध पिओ	....	दुग्धं पिब	....पिबन्तु
कागज ले जाओ	....	कर्गजं नय	...नयन्तु
डाक्टर लाओ	....	मार्जनीम् आनय	....आनयन्तु
चन्द्रको देखो	....	चन्द्रं पश्य	...पश्यन्तु
महान् पुरुष बनो	....	महापुरुषो भव	....भवन्तु
मित्रसे मिलो	....	मित्रं/बन्धुं मिल	....मिलन्तु
रामको पुछो	....	रामं पृच्छ	पृच्छन्तु
मादकद्रव्योंका सेवन मत करो	....	मादकद्रव्यसेवनं त्यज	....त्यजन्तु
थोड़ा रुको	....	क्षणं तिष्ठ	तिष्ठन्तु
बिस्तर से उठो	....	शय्यातः उतिष्ठ....	उतिष्ठन्तु
काम करो	... .	कार्यं कुरु	कुर्वन्तु
भिक्षा दो	....	भिक्षां देहि	ददतु
पेन रखो	....	लेखनीं स्थापय	स्थापयन्तु

मैदानमें दौड़ो	... .	प्रान्तरे धाव ... धावन्तु
घर साफ करो	......	गृहं क्षालय ... क्षालयन्तु

साधारणः वार्तालापः

आपका नाम क्या है?	....	भवतः नाम किम्?
मेरा नाम	... ...	मम नाम
घर कहाँ है?	....	गृहं कुत्र वर्तते?
कटनीमेंपुरीमें	....	कटन्यांपुर्याम्
पिताजी क्या करते हैं?	....	पितृपादाः किं कुर्वन्ति?
पिताजी शिक्षक हैं	....	पितृपादः शिक्षकः
आप क्या पढ़ रहे हैं?	....	भवान् किं पठति?
मैं दशम कक्षामें पढ़ रहा हूँ	... .	अहं दशमकक्षायां पठामि
क्या इस पतितपावन	....	किम् अत्र पतितपावन
हाईस्कूलमें?	......	उच्चविद्यालये?
हाँ	......	आम्
आपके स्कूलमें कितने छात्र हैं?	....	भवतः विद्यालये छात्राः कति?

लगभग छः सौ	....	प्रायशः षट्शतम्
आपका परिचय?	....	भवतः परिचयः ?
मैं यहाँ शिक्षक हूं	....	अहम् अत्र शिक्षकः
क्या आप यहाँ रहते हैं ?	...	किं भवान् अत्र निवसति ?
नहीं, मैं भुवनेश्वर में रहता हूं	....	नहि, अहं भुवनेश्वरे निवसामि

निर्देशवाक्यानि

सत्य कहो	....	सत्यं वद
धर्म का आचरण करो	....	धर्मं चर
दुःख मत करो	....	दुःखं मा कुरु
बायें तरफ चलो	....	बामपार्श्वे चल
रोको	....	तिष्ठ
आगे विद्यायल	....	अग्रे विद्यालयः
आहिस्ता गाड़ी चलाओ	....	यानं शनैः चालनीयम्
आगे गतिरोध है	....	गतिरोधाः अग्रे
रास्ता टेढ़ा है	....	विपद् वक्रता

व्यवहारवाक्यानि

विपद	....	विपदः
बायें मोड़	....	वामतो गतिः
दायां मोड़	....	दक्षिणतो गतिः
कृपया पंक्ति में	....	अनुपंक्तौ कृपया
हल्ला मत करो	....	कोलाहलः मास्तु
धार नहीं है	....	धारः नास्ति
बत्ती जलाओ	....	विद्युद्दीपयतु
पंखा चलाओ	... .	व्यंजनं पिञ्जयतु
बत्ती बुझाओ	....	दीपं निर्वापयपु
पंखा बन्द करो	....	व्यजनं स्थगयतु
ब्रेक लगाओ	....	रोधयतु

समयसूचकवाक्यानि

कितना समय है ?	... .	कः समय ?
कितने बजे	....	कति वादनम् ?
अब दश बज रहे हैं	... .	अधुना दश वादनम्
साढ़े दश हुआ	... .	सार्धदशवादनम् जातम्

सवा दश	....	सपाददशवादनम्
पौने ग्यारह	....	पादोन एकादशवादनम
दश बजके बीस मीनट	......	विंशति अधिकं दशवादनम्
दश बजके पाँच मिनट	....	पञ्चाधिक दशवादनम्
सुबह छः	....	प्रातः षड्वादनम्
मध्याह्न ग्यारह	....	मध्याह्ने एकादशवादनम्
शाम पांच	......	सायं पञ्चवादनम्
रात साढ़े नौ	....	रात्रौ सार्धनववादनम्
मैं साढ़ेदश बजे विद्यालय जाता हूं	....	अहं सार्धदशवादने-विद्यालयं गच्छामि

यहां साढ़े छः बजे ध्यान होता है—अत्र सार्धषड्वादनने ध्यानं प्रचलति

कुटिया में बारह बजे भोजन होता है— कुटीरे द्वादशवादने भोजनं भवति

विद्यापीठ में प्रातः पाच बजे संध्या वन्दन होता है—

विद्यापीठे प्रातः पञ्चवादने संध्यावन्दनं भवति ।

मैं पांच बजे संध्या वन्दन करता हुं—

अहं पञ्चवादने संध्यावन्दनं करोमि ।

सौजन्यव्यवहार:

महाशय ! क्या आपका नाम जान सकता हूं—

श्रीमन् कि भवत: नाम ज्ञातुं शक्नोमि ?

महाशय, क्या चाय, कफि या दूध ले आऊँ—

किं चायं कफि वा क्षीरं दास्यामि ?

नही, रहने दीजिए, धन्यवाद — मास्तु धन्यवाद: ।

मुझे कुछ भी आवश्यक नहीं है—

मम किमपि आवश्यकं नास्ति ।

ध्यान कीजिये — ध्यानं कुर्वन्तु

थकावट दूर कीजिए — क्लान्तिम् अपनयन्तु

कलम है क्या ? थोड़ा दीजिए—

लेखनी अस्ति वा ? कृपया ददातु ।

कटनी के लिये कितने बजे बस है—

कटनीं प्रति बासयानं कदा अस्ति ।

क्या कह सकते हैं ?— सूचयितुं पारयन्ति वा ?

नहीं मैं ठीक से नहीं जानता हूं—

नहि, अहं सम्यक् न जानामि ।

कृपया टेलीफोन दीजिए — कृपया दूरभाषं ददातु ।

कितना नम्बर है ? — दूरभाष संख्या कति ?

हेलो, २४७१ — हरिः ॐ, द्विचतुः-सप्त-षट् ।

ओह ! नम्बर में भूल हो गया — ओम्, भ्रान्तसंख्या ।

क्षमा कीजिए — क्षन्तव्यम् ।

क्या आपके पिता जी स्वर्गवासी हो गये ?— भवतां पितृपादाः दिवं गताः ?

वास्तव में मैं दुखी हूँ — अहं सुदुःखितः ।

क्या अन्दर आ सकता हूँ ?— क्षन्तव्यं, किम् अहमन्तरागच्छानि ?

महाशय, कृपया करमण्डल एक्सप्रेस में मद्रास तक का आरक्षण कर दीजिए— श्रीमन्, कृपया करमण्डलद्रुतयानेन मद्रासं प्रति आरक्षणव्यवस्थां कारयन्तु ।

क्षमा कीजिए, नहीं हो सकेगा — क्षन्तव्यं, न सम्भवति ।

८१ नम्बर की बस क्या दिल्ली जाती है ? — एकाशीतिसंख्यकं बसयानं दिल्लीं प्रति गच्छति वा ?

मैं ठीक से नहीं जानता हूं — नाहं साधु जानामि।
आप किसलिए हँस रहे हैं? — भवन्तः किमर्थं हसन्ति?
कृपया कुछ नहीं सोचिएगा—

कृपया अन्यथा न चिन्तयन्तु

हाँ, मैं हर समय यही करना चाहता हूं—

सत्यं, अहं सर्वदा एवं कर्तुमिच्छामि।

इसमें कुछ आपत्ति है क्या? —

किमत्र अभियोगः अस्ति वा?

यदि आपत्ति नहीं है तो बहुत अच्छा —

अभियोगः नास्ति चेत् समीचीनम्।

धन्यवाद, बहुत धन्यवाद — धन्यवादः, बहु धन्यवादः
आपका उपकार मैं नहीं चुका सकुंगा—

भवतः उपकारं प्रत्युपकारेण समर्पयितुं न पारयिष्यामि

आपका उपदेश अत्यन्त उपादेय है —

भवताम् उपदेशः अत्युपादेयः

आपके परामर्श के लिए मैं कृतज्ञ हूं—

भवतां परामर्शनिमित्तम् अहं कृतज्ञः

आपके मार्गदर्शन के बिना मैं इस कार्य में कभी भी सफल नहीं हो सकता—

अहं कदापि भवतां मार्गदर्शनं विना
अस्मिन् कार्ये सफलः न भवेयम् ।

इसलिए आपको धन्यवाद — धन्यवादाः ।

आपको शुभेच्छा मिली, मेरे तरफ से धन्यवाद—

भवदीयः शुभाशयः प्राप्तः,धन्यवादाः ।

आपकी कृपा से मैं आनन्दित हूं—

भवतां कृपया अहम् आनन्दितः / आनन्दिता ।

आपका आतिथ्य से मुझे बहुत आनन्द मिला—

भवतां आतिथ्यम् अत्यन्तम् आनन्दप्रदम् ।

आपके व्यवहार से मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हूं—

भवतां व्यवहारेण अहम् अतीव प्रीतः / प्रीता ।

आपकी सेवा, सुयोग आने पर—

भवतां सेवानिमित्तं सुयोगं प्राप्नोमि चेत्

मैं कृतकृत्य हूंगा अहं कृतकृत्यः / कृतकृत्या भविष्यामि ।

दूकान में बातचीत — आपणे वार्तालापः

दूकानदार क्या चाहिए ?

आपणिकः किम् आवश्यकम् ?

ग्राहक— साबुन है क्या

क्रेता— फेनकम् अस्ति वा ?

दूकानदार कौन सा साबुन चाहिए ?

आपणिकः—कीदृशं फेनकम् इच्छन्ति ?

ग्राहक— मुझे सनलाइट की जरूरत है।

क्रेता— मम सनलाइट आवश्यकम्—

दूकानदार— 'सनलाइट' नहीं है। खतम हो गया। 'ओके' लीजिए।

आपणिकः— 'सनलाइट' नास्ति समाप्तम्, 'ओके' फेनकं नयन्तु।

ग्राहक— 'ओके' साबुन क्या अच्छी है।
क्या सनलाइट जैसे फेन निकलता है ?

क्रेता— 'ओके' किं सम्यक् ?
'सनलाइट' इव फेनकं भवति वा ?

दूकानदार—एक बार परीक्षा करके देखिये।

आर्पणिकः—परीक्षा करणीया।

ग्राहक— ठीक है, एक 'ओके' और एक दन्तमञ्जन दीजिए।

क्रेता— अस्तु 'ओकं' फेनकम् एकं ददतु दन्तमन्जनं एकमपि ददतु।

ग्राहक— कितना मूल्य हुआ ? क्रेता–कति मूल्यम् ?

दूकानदार— 'ओके' की कीमत दो रूपये पचास पैसे दन्तमञ्जन की कीमत तीन रूपये साठ पैसे कुल मिलाकर छः रुपये दश पैसे हुए।

आपणिकः— 'ओके' इत्यस्य मूल्यं सार्द्धरूप्यकद्वयम् एवं दन्तमञ्जनस्य मूल्यं त्रीणि रूप्यकाणि षष्टिः पैसाः, सर्वम् आहत्य षट्रूप्यकाणि दश पैसाः।

ग्राहक— ओ .. भूल गया च्यवनप्राश है क्या ?

क्रेता— ओ....विस्मृतम्, रसायनं अस्ति वा ?

दूकानदार—जी हाँ। महर्षि आयुर्वेद-रसायनका आपको कौन सा चाहिए?

आपणिकः—अस्ति। च्यवनप्राश—महर्षि आयुर्वेद रसायनस्य च्यवनप्राशः अस्ति। भवतां किम् आवश्यकम्।

ग्राहक — मध्यम अकारका रसायन आप दीजिए। कितनी कीमत?

क्रेता— मध्यमाकारकं महर्षि-रसायनं ददातु। कति मूल्यम्?

दूकानदार—चार रूपये अस्सी पैसे।

आपणिकः—चत्वारि रूप्यकाणि अशीति पैसाः।

ग्राहक—लीजिए क्रेता—नयन्तु।

दूकानदार—धन्यवाद, फिर आइयेगा।

आपणिकः—धन्यवादः, पुनः पुनः आगच्छन्तु।

बस में बातचीत -- बसयाने वार्त्तालापः

कण्डक्टर— आपका टिकेट ?

संचालकः— भवताम् अधिपत्रम् ?

यात्री— दीजिए।

यात्री— ददतु ।

कण्डक्टर— कहाँ जाएँगे ?

संचालकः— कुत्र गमिष्यन्ति ?

यात्री— कटनी।

यात्री— कटनीम्

कण्डक्टर— सात रूपये दीजिए।

संचालकः सप्तरूप्यकाणि ददतु।

यात्री – क्यों ? पुरी से कटनी का किराया तो छः रूपया पचीस पैसा है।

यात्री— कथम् ? पुरीतः कटनीपर्यन्तं बस् भाटकं केवलं सपाद-षट्रूप्यकाणि।

कण्डक्टर – हाँ, ठीक है, लेकिन यह एक्सप्रेस गाड़ी है, इसलिए मैं एक्सप्रेस बस का किराया कह रहा हूं।

संचालकः— सत्यं, परन्तु इदं द्रुतगामियानम्, अहं तु द्रुतगामियानस्य भाटकं सूचयामि।

यात्री— आप पहले से ही क्यों नहीं बताये? अगर हमारी इच्छा होती तो बैठते नहीं तो चले जाते।

यात्री— भवान् किमर्थं पूर्वम् एतद्विषयं नोक्तवान्? इच्छा अस्ति चेत् उपवेक्ष्यामः नोचेत् चलिष्यामः।

कण्डक्टर— अब भी उतर सकते हैं।

संचालकः— अधुना अपि भवान् अवतरितुम् पारयति।

यात्री— ठीक है, टिकट दीजिए।

यात्री— भवतु, अधिकारपत्रं ददातु।

कार्यालय में बातचीत — कार्यालये वार्तालापः

हरीश बाबू नमस्ते — हरीश महोदय। नमस्ते।

आज क्यों इतना देर लगा दिए—

अद्य कथं एतावान् विलम्बः?

मैं रोज सुबह भुवनेश्वर से आया जाया करता हूं—
अहं प्रत्यहं भुवनेश्वरतः गच्छामि—आगच्छामि।

बैनर बस के बारे में तो आप जानते हैं, यह बैनर नहीं है बानर है।

वनरस्य व्यवस्थां तु जानन्ति। इयं न बैंनर अपि तु वानरव्यवस्था एव।

और सब तो ठीक है। — किं सर्वं कुशलम्।

गृहस्थ जीवन में भला बुरा क्या पूछ रहे हैं? हर घड़ी झमेला।

गृहस्थजीवने कुशलं किं वा पृच्छन्ति? सर्वदा समस्याः भवन्ति।

आपका क्या काम है? — भवतः किं कर्म

सर, तीन महीने से मेरा वेतन नहीं मिला हैं।
जल्दी व्यवस्था कीजिये।

श्रीमन्, मासत्रयात् वेतनं न प्राप्तम्, कृपया शीघ्रं व्यवस्थां कुर्वन्तु।

अरे, आपका बिल कहाँ है मैं तो नहीं पाया हूं।

अये, भवतः वेतन-पत्रकं कुत्र ? मया तु न प्राप्तम्।

वह तो बहुत पहले भेजा गया है।

तत्तु बहुदिनात् प्रेषितम्

ठीक है मैं देखता हूं — भवतु, अहं पश्यामि।

रामू, वह फाइल जरा लाना तो।

रामू तां पत्रावलीम् आनय।

कितने नम्बर का, क्या यह ग्यारह नम्बर वाला ?

कति संख्याम्, इमां एकादशसंख्यकां वा ?

हाँ उसी को — आम् तामेव

सर्, मैं कल से सी. एल. लूँगा।

श्रीमन्, अहं श्वः सकारणमवकाशम् इच्छामि।

क्यों ? — किमर्थम् ?

कल घर जाने के लिए सोच रहा हूं

श्वः गृहं गन्तुमिच्छामि।

ठीक है, एक दिन की छुट्टी लीजिए।

भवतु एकस्य दिनस्य अवकाशं नयतु।

धन्यवाद — कृतज्ञोऽस्मि ।
और क्या समाचार ? — कः विशेषः समाचारः ?
वैसे कुछ नहीं है । — तथापि किमपि नास्ति ।
क्या आप अच्छे से हैं ? — अपि सर्वं कुशलं भवतः ?
भवतः सर्वं कुशलं वा ?
हाँ, सुख-दुःख में चल रहा है ।
आम्, सुखेन दुःखेन प्रचलति ।

——

डाकघर में बातचीत -- पत्रालये वार्तालापः

महाशय, क्या पोस्टकार्ड है ?—श्रीमन्, समपत्रम् अस्ति ?
कितना चाहिए — कति आवश्यकम् ।
दश चाहिए - दश पत्राणि ददतु ।
पांच अन्तर्देशीय और पाँच लिफाफा भी दीजिए ।
पञ्चअन्तर्देशीयपत्राणि अपि ददतु ।
कुल छः रूपये दीजिए — आहत्य षड्रूप्यकाणि ददतु ।
लीजिए, धन्यवाद — नयन्तु, धन्यवादः !

० प्रकीर्णवाक्यानि ०

अरे ! बहुत गर्मी लग रही है ।
भो सखे ! अद्य रौद्रतापः अनुभूयते ।
नदी के किनारे ठंडी हवा चलती है, चलो वहीं चले ।
नदीतीरे शीतलपवनः वहति, तत्र गमिष्यावः ।
सिर मत नहाओ, सर्दी होगी ।
शिरःस्नानं मास्तु, शैत्यं भविष्यति ।
सोकर मत पढ़ो, आँखें खराब हो जाएंगी ।
शयानः मा पठतु, नेत्रम् असमीचीनं भविष्यति ।
हर समय गम्भीर मत बनो, सिरदर्द होगा ।
सदा गम्भीर भाव मास्तु, शिरोव्यथा भविष्यति ।
ज्यादा हँसो मत, सब भूल जाओगे ।
अत्यधिकः हासः मास्तु, सर्वं विस्मरणं भविष्यति ।
खेल के समय खेलो, पढ़ने के समय पढ़ो ।
खेल समये खेलतु, पठन समये पठतु ।
अन्धेरा हो गया लाइट जलाओ ।
अन्धकारः संजातः, दीपं दीपयतु ।

सोचें ! समझें ! पढ़ें ! और मानव बनें !

सरल सहज सुबोध संस्कृत सीखिये ! केवल
२० घण्टे में संस्कृत बोलिये संस्कृत कठीन
नहीं है भारत की भाषा संस्कृत है
संस्कृत ही इस देश को बचा सकती
है, आइये ! संस्कृत पढ़कर
अपने आपको उच्चमार्ग
पर ले जाइये ।

प्रकाशिका
लोकभाषा-प्रचार-समितिः
बड़ा-ओडिया-मठः, पुरी (ओड़िशा)
पीन—७५२००१

मूल्यम्—एक रूप्यकम्